PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

पं0 चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानियों के कथ्य और शिल्प : एक समीक्षात्मक अध्ययन

• एकता प्रियदर्शिनी • अदिति शर्मा • कुमारी प्राची मिश्रा
• दीपा श्रीवास्तव

Received : November 2016
Accepted : March 2017
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract : पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं, जो मात्र एक कहानी 'उसने कहा था' के बल पर हिन्दी साहित्य के संपर्क में आनेवाली अनेक पीढ़ियों के स्मृति पटल पर छाए रहे हैं। पूर्व दीप्ति शैली में लिखी इनकी यह कालजयी रचना नि:स्वार्थ प्रेम, बलिदान और त्याग की अमर गाथा है। लेकिन गुलेरी जी ने अपने पूरे साहित्यिक जीवन में केवल एक कहानी नहीं लिखी थी। 1911 ई0 में उनकी दो अन्य कहानियाँ भी प्रकाशित हुई थीं - 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा' । कथ्य और शिल्प की दृष्टि से ये दोनों कहानियाँ भी अपने समय की अद्‌भुत कहानियाँ थी।

इन तीनों कहानियों के पात्र साधारण हैं। इन साधारण पात्रों को लेकर गुलेरी जी ने असाधारण सौंदर्य की सृष्टि की। जीवन की जिन स्थितियों के चित्र उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किए, वे आज भी नवीन है। साहित्य की विशिष्टता क्षण-क्षण नए सौंदर्य को प्रकट करने में हैं। मौलिकता ही वह तत्त्व हैं, जो किसी रचना को नित्य नया सौंदर्य प्रदान करती है। गुलेरी जी की तीनों कहानियाँ मौलिक होने के साथ-साथ परिस्थितियों पर इच्छाशक्ति की विजय की रचनाएँ हैं। इसलिए ये आज भी ताजगी और ऊर्जा से ओतप्रोत हैं। हिन्दी साहित्याकाश के जगमगाते नक्षत्रों के मध्य इन उत्कृष्ट कहानियों के रचनाकार के रूप में गुलेरी जी का यश ध्रुवतारे की तरह सदा अटल रहेगा

संकेत शब्द :- कालजयी, आदर्श, मौलिकता, शाश्वत लोकप्रियता।

एकता प्रियदर्शिनी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अदिति शर्मा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमारी प्राची मिश्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2014–2017), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

दीपा श्रीवास्तव
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

भूमिका :

हिन्दी के अनन्य आराधक और बहुआयामी प्रतिभा के धनी अमर कहानीकार पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी का साहित्यिक जीवन बीसवीं शताब्दी के उन्मेष से प्रारंभ होता है। यह समय पुरातत्त्व, इतिहास तथा भाषा विज्ञान संबंधी अनुसंधानों का था। डॉ० श्यामसुंदर दास, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और मैथिलीशरण गुप्त जैसे साहित्यसेवी इस समय अपनी एक विशिष्ट पहचान बना चुके थे। ऐसे साहित्यिक परिवेश में गुलेरी जी भी 'समालोचक', 'सरस्वती', 'अभ्युदय' एवं 'आनंद कादंबिनी' जैसी पत्रिकाओं से विशेष रूप से जुड़कर हिन्दी जगत के बौद्धिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बन गए थे।

विजयेंद्र स्नातक के शब्दों में :-

''चन्द्रधर शर्मा गुलेरी संस्कृत, प्राकृत्त, अपभ्रंश और